# बुद्धिवाद

# Rationalism

बुद्धिवाद ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त है जो कहता है कि बुद्धि ही एकमात्र यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का साधन या स्रोत है। जब बुद्धिवादी कहते हैं कि "बुद्धि ज्ञान का साधन है" तब बुद्धि के स्वरूप को जानना अनिवार्य हो जाता है। बुद्धिवादियों का बुद्धि के स्वरूप के बारे में निम्नलिखित विचार है :-

(क) बुद्धिवाद बुद्धि की शक्ति की व्याख्या करते हुए बताता है कि मानव मस्तिष्क की अन्य शक्तियों की अपेक्षा बुद्धि में निर्विवाद ज्ञान को उत्पन्न करने की शक्ति है। हमारे जीवन में ज्ञान-शक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है।

(ख) ज्ञान को उत्पन्न करने में बुद्धि अन्य किसी साधन पर निर्भर नहीं करता है। विशेषतः इसे बाह्य या आन्तरिक किसी भी प्रकार के अनुभव की सहायता नहीं लेनी पड़ती। बुद्धि की ज्ञान उत्पन्न करने की क्रिया अनुभव से स्वतंत्र है।

(ग) बुद्धि अपने अंदर से ज्ञान उत्पन्न करती है। हर मानव मस्तिष्क में ज्ञान उत्पन्न करने की शक्ति अर्जित नहीं बल्कि सहज रूप से जन्म से ही वर्तमान है। कुछ सहज प्रत्यय (Innate idea) धारणाएँ (Concepts), सिद्धान्त (Principles) जन्म से ही हर मस्तिष्क में मौजूद हैं। ये प्रत्यय स्वयंसिद्ध (Self evident) हैं क्योंकि उनकी प्रमाणिकता का प्रश्न नहीं उठाया जा सकता है। इन्हीं प्रत्ययों को आधार मानते हुए बुद्धि इनसे कुछ निष्कर्षों को निगमित करती है जो ज्ञान को देते हैं। बुद्धि इन प्रत्ययों में निहित सत्यों को तर्कपूर्ण पद्धति के सहारे बाहर करती है और वह ज्ञान उतना ही सत्य है जितना कि उनके ~~बाह्य~~ आधार में मौजूद जन्मजात प्रत्यय।

(घ) बुद्धि पूरी प्रक्रिया में अन्य तत्व पर निर्भर नहीं करता, अतः पूर्ण रूप से वह स्वतंत्र ज्ञान शक्ति है। इसलिए बुद्धि ज्ञान उत्पन्न करने में सक्रिय रहता है।

(ङ) बुद्धि की पद्धति निगमनात्मक है। जैसे कि एक न्याय (syllogism) में बुद्धि निगमनात्मक पद्धति से दो आधार वाक्य, "सभी मनुष्य मरणशील हैं", "राम एक मनुष्य है", निष्कर्ष निकलती है कि "राम मरणशील है"। यहाँ सहज प्रत्ययों से बुद्धि ज्ञान निगमित करती है।

(5) बुद्धि से निगमित ज्ञान सार्वभौम एवं अनिवार्य होता है इसलिए कि आधार के रूप में उपस्थित सहज प्रत्यय सभी मस्तिष्क में वर्तमान हैं। ये अनिवार्य इसलिए हैं कि निगमनात्मक पद्धति से आधार वाक्यों से निगमित होते हैं एवं इनके विरोधी सत्य को हम सोच नहीं सकते।

(6) ऐसे ज्ञान का आदर्श गणित है क्योंकि गणित के ही ज्ञान सार्वभौम एवं अनिवार्य होते हैं। समद्विबाहु त्रिभुज की परिभाषा के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि इसके आधार पर के कोण बराबर होते हैं, जो सार्वभौम एवं अनिवार्य है। अतः सहज प्रत्ययों से बुद्धि के द्वारा निगमित ज्ञान सार्वभौम एवं अनिवार्य होता है क्योंकि यह अनुभव निरपेक्ष है। इसी कारण बुद्धिवाद को अनुभव-निरपेक्षवाद भी कहा जाता है।

* बुद्धिवाद के प्रमुख लक्षणों की व्याख्या इस प्रकार है :-

(1) बुद्धिवाद बहुत ही व्यापक विचार है। वृहद अर्थ में हम उन सभी विचारों को इसके अन्तर्गत लायेंगे जो रूढ़िवाद (dogmatism) के विपरीत हो, प्रत्येक आधुनिक विचार को इस अर्थ में हम बुद्धिवाद के अन्तर्गत करेंगे। संकुचित अर्थ में 'बुद्धिवाद' का प्रयोग 'अनुभववाद' के विरोधी सिद्धान्त के रूप में होता है। इस अर्थ में, दोनों ही ज्ञान ज्ञानशास्त्रीय प्रश्न जैसे ज्ञान की उत्पत्ति कैसे होती है अपने विचार को प्रस्तुत करते हैं जो बिल्कुल एक दूसरे के विपरीत हैं। दर्शन के इतिहास में इसी संकुचित अर्थ में बुद्धिवादवाद का प्रयोग होता है।

(2) बुद्धिवाद का केन्द्रिय बिन्दु है बुद्धि ज्ञान का साधन है। इसे सही ढंग से समझने के लिए हम पहले 'ज्ञान' के अर्थ एवं उसके उचित मुख्य लक्षणों की विवेचना करेंगे। "ज्ञान" का अर्थ 'यथार्थ ज्ञान' है। भारतीय दर्शन एवं अयथार्थ ज्ञान को क्रमशः प्रमा एवं अप्रमा कहा गया है। बुद्धि ही यथार्थ ज्ञान का स्रोत है।

यथार्थ ज्ञान की पहचान है उसकी अनिवार्यता (Necessity) एवं सार्वभौमिकता (Universality) यही दोनों यथार्थ ज्ञान के मापदण्ड हैं। सार्वभौम ज्ञान वह है जो सर्वत्र पाया जाय। इसकी सत्यता हर देश में एक समान हो। स्थान के परिवर्तन से ऐसे ज्ञान में कोई अन्तर नहीं पड़ता। जैसे 2+2 = 4। यह हर देश के लिए एक समान लागू होता है। अनिवार्य ज्ञान वह है जिसका विरोध में नहीं कर सकते। यह निर्विवाद ज्ञान है। यह ज्ञान विशेष होता है एवं इसका विरोधी रूप नहीं सोच सकते हैं।

(3) ऐसे सार्वभौम एवं अनिवार्य ज्ञान केवल बुद्धि से ही प्राप्त होता है अर्थात् बुद्धिवाद ही एकमात्र सार्वभौम ज्ञान का जनक कहा जाता है।

# बुद्धिवाद के विचारक

पाश्चात्य विचार में पार्मेनाइडीज (Parmenides) हेराक्लीटस (Heraclitus) एवं डेमोक्राइटस (Democritus) बुद्धिवादी हैं। इन सबों के अनुसार यथार्थ ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा नहीं, बल्कि बुद्धि के द्वारा प्राप्त होता है। मगर इन विचारकों में बुद्धिवाद का विकसित रूप देखने को नहीं मिला। सुकरात (Socrates) में यह पहले से ज्यादा विकसित रूप में पाया गया। उनके अनुसार वर्ग-सूचक प्रत्यय जैसे सद्‌गुण (Virtue), ज्ञान (wisdom) इत्यादि हमें यथार्थ ज्ञान देते हैं। इन्हें हम अनुभव के द्वारा नहीं, बल्कि बुद्धि के द्वारा जानते हैं। प्लेटो इस विचार को और ज्यादा विकसित करते हैं। उन्होंने सुकरात के इस विचार को मान लिया कि यथार्थ ज्ञान इन सामान्य प्रत्ययों में निहित है। मगर इन ज्ञानात्मक बिंदुओं को उन्होंने तात्विक सत्ताओं में बदला। चूँकि संवादिता सत्यता का मापक है। अतः इन वर्ग-प्रत्ययों के अनुरूप जो वस्तुनिष्ठ तत्व है वे ही परमार्थ हैं। इन्हें प्लेटो ने प्रत्यय (Idea) कहा। चरम तत्व इन्हीं प्रत्ययों की समष्टि है। जो विचार, स्वरूप, सार्वभौम, नित्य, देश-काल से परे, इत्यादि हैं। इन्हें हम इन्द्रियों, विश्वासों या भावनाओं के आधार पर नहीं जान सकते। क्योंकि इनके द्वारा प्राप्त ज्ञान, भ्रमात्मक एवं अनिश्चित होते हैं। परन्तु प्रत्यय (idea) तो निश्चित, नित्य एवं सार्वभौम होते हैं, जो यथार्थता के आधार हैं एवं ~~केवल~~ एकमात्र बुद्धि से इस यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है।

पाश्चात्य आधुनिक काल में डेकार्ट (Descartes), स्पीनोजा (Spinoza), लाइबनिज (Leibnitz), वोल्फ (wolff), हेगेल (Hegel) आदि बुद्धिवादी विचारक हैं।

Descartes डेकार्ट के अनुसार बुद्धि का सार धर्म विचार है। इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त ज्ञान भ्रमात्मक हो सकता है। केवल बुद्धि ही असंदिग्ध ज्ञान देती है। हमारे मस्तिष्क में कुछ सहज प्रत्यय हैं जैसे ईश्वर, कारणता, नैतिकता इत्यादि के प्रत्यय। ये ही प्रत्यय यथार्थ ज्ञान के आधार हैं। बुद्धि निगमनात्मक पद्धति से इन्हीं स्वयंसिद्ध जन्मजात प्रत्ययों से ज्ञान को निर्मित करती है जो सार्वभौम एवं अनिवार्य है। यह ज्ञान पूर्णतः स्पष्ट एवं असंदिग्ध होता है। सहज प्रत्यय ज्ञान के आधार हैं और ईश्वर उनका प्रतिष्ठाता है, जो पूर्ण है, शुभ है एवं कभी भी वंचक नहीं हो सकता।

स्पीनोजा के अनुसार द्रव्य या ईश्वर एकमात्र चरम तत्व है। संसार के सभी पदार्थ इसी द्रव्य के प्रकार (Modes) हैं एवं ईश्वर से अलग इनकी कोई वास्तविकता नहीं। यथार्थ ज्ञान इसी द्रव्य के ज्ञान में निहित है जो एकमात्र बुद्धि ही दे सकती है। इस ज्ञान से कल्पनाजन्य ज्ञान है जिसमें इन्द्रिय, स्मृति इत्यादि सभी का ज्ञान निहित है जो अपूर्ण एवं अस्पष्ट हैं। ये अवास्तविकता का ज्ञान देते हैं।

वास्तविकता का ज्ञान सिर्फ बुद्धि से मिलता है। स्पीनोजा कुछ सहज प्रत्ययों को मानते हैं जिनसे निगमनात्मक पद्धति से गणित के समान बुद्धि ज्ञान को निर्मित करती है। स्पीनोजा ने प्रतिभा (Intuition)

एवं अनुमान-जन्य (Inferential) दोनों को ज्ञान का दर्जा ... पहले में हमें उन प्रत्ययों का अपरोक्ष ज्ञान होता है जो सत्य के आधार हैं और दूसरे में इन प्रत्ययों से अनुमित ज्ञान आता है जो सत्य एवं निश्चित है। यह बौद्धिक ज्ञान प्रमाणिक होगा ही क्योंकि विचार एवं भौतिक जगत दोनों में पूर्ण संवादिता है एवं विचार तथा विस्तार उसी द्रव्य के गुण धर्म हैं। बौद्धिक ज्ञान बाह्य जगत के लिए सत्य होगा ही।

लाइबनीज के अनुसार चिद्-बिन्दु (Monads) ही विश्व के मूल तत्व हैं। जो आध्यात्मिक अणु हैं। इसलिए प्रत्येक चिद्-बिन्दु दूसरे से स्वतंत्र है आत्म-निर्भर है, स्वयं क्रियाशील है। यह ज्ञान बीज रूप रूप में रहता है और इसके विकास के फलस्वरूप ही ज्ञान प्राप्त होता है। सारे जन्मजात प्रत्ययों की चेतना स्पष्ट रूप से नहीं होती। मस्तिष्क तो पत्थर के टुकड़े की तरह है, जिसमें मूर्ति बनने की क्षमता है, उसी प्रकार अनुभव इस ज्ञान के विकसित होने का अवसर देता है; मगर अनुभव का अर्थ यहाँ एन्द्रिय अनुभव से नहीं, बल्कि मानव बुद्धि की यह स्वतंत्र क्रिया है। अतः बुद्धि ही यथार्थ ज्ञान का साधन है। वुल्फ (wolff) ने ज्ञान के क्षेत्र को तीन मुख्य भागों में बाँटा जो बौद्धिक विश्व-विज्ञान (Rational cosmology), बौद्धिक मनोविज्ञान (Rational Psychology) एवं बौद्धिक ईश्वर-विज्ञान (Rational Theology) के नाम से जाने गये। प्रत्येक खंड में इन्होंने कुछ निश्चित, असंदिग्ध प्रत्ययों या सिद्धान्तों को माना जिसे आधार मानते हुए बुद्धि निष्कर्षों को निगमित करती है जो यथार्थ ज्ञान देते हैं।

हेगेल के अनुसार बुद्धि मूल तत्व है, जो सर्वव्यापक एवं निरपेक्ष है। इसे निरपेक्ष प्रत्यय (Absolute Idea) भी कहते हैं। हेगेल के अनुसार बुद्धि ही वास्तविक है एवं वास्तविक ही बुद्धि है। वही निरपेक्ष बुद्धि अपने को मानव बुद्धि एवं प्रकृति में अभिव्यक्त करती है। बौद्धिक ज्ञान की पद्धति (dialectical) है जो वाद (Thesis), प्रतिवाद (anti-thesis) and संवाद (Synthesis) तीन स्थितियों से गुजरती है। यही प्रक्रिया प्रकृति के विकास के लिए भी लागू होती है। बौद्धिक ज्ञान का चरम बिन्दु 'दर्शन' कहलाता है जो की चरम तत्व का सर्वोच्च पर्याप्त ज्ञान देता है। यह ज्ञान स्पष्टतः प्रामाणिक है क्योंकि वास्तविकता ही बौद्धिक है।

समकालीन विचारक — समकालीन दर्शन में बुद्धिवाद का अर्वाचीन रूप देखने को मिलता है, परम्परागत रूप नहीं। इसे नवीन बुद्धिवाद (New Rationalism) कहते हैं। इस विचार के अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति सिर्फ बुद्धि से नहीं, बल्कि अनुभव से भी होती है। परन्तु 'अनुभव' का अर्थ इन्द्रिय-संवेदना के ज्ञान से नहीं है बल्कि

कल्पना के ज्ञान से नहीं है, बल्कि पदार्थों के संपर्क में सहज बुद्धि के द्वारा क्रिया - प्रतिक्रिया से उत्पन्न ज्ञान के खजाने से है। बुद्धि अपने अन्दर से अनुभव से स्वतंत्र ज्ञान उत्पन्न नहीं करती। मन शरीर की भांति प्रकृति में ही विकसित होता है। हम प्रकृति से ही गणित एवं तर्कशक्ति पाते हैं; अतः अन्य सत्यों से अधिक उच्चतर बुद्धि मानव मस्तिष्क की सर्वोच्च अलौकिक शक्ति नहीं, जिसके द्वारा हम विश्व के प्रत्येक क्षेत्र, लौकिक, एवं परलौकिक दोनों को जान पायें। मानव बुद्धि उपयोगात्मक होती है, जो अपनी रुचि के अनुसार तथ्यों को चुनकर सीखने की कोशिश करती है। आत्मनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ तत्वों का स्पष्ट प्रयोग हमें एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला में देखने को मिलता है। यहाँ मानव मस्तिष्क की रचनात्मक एवं सृजनात्मक शक्ति और वस्तुनिष्ठ तत्वों के अच्छे संमिलन से अद्यतन वैज्ञानिक ज्ञान की उत्पत्ति होती है। नवीन बुद्धिवादियों ने "बुद्धि" शब्द की जगह पर "सृजनात्मक चिंतन" शब्द का प्रयोग किया।

जेम्स हार्वे रॉबिन्सन (James Harvey Robinson) says, "I suggest, therefore, that we substitute a recent name and speak of creative thought rather than of reason." ऐसा चिंतन ही ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्धियों का कारण है।

## मूल्यांकन

1. आलोचकों के अनुसार बुद्धिवाद एकांगी (one-sided) एवं रूढ़िवादी सिद्धान्त है। यह ज्ञान की उत्पत्ति के लिए केवल बुद्धि को ज्ञान का साधन मानता है और ज्ञान को उत्पन्न करने में अन्य तत्वों की अवहेलना करता है। ज्ञान की उत्पत्ति में अनुभव का भी महत्वपूर्ण योगदान है जिसे बुद्धिवाद नहीं मानते। सर्वभौम एवं अनिवार्यता की एकमात्र यथार्थ ज्ञ के मापक मानने के चलते अनुभव से प्राप्त ज्ञान की अवहेलना करते। बुद्धिवाद रूढ़िवादी सिद्धान्त है क्योंकि यह बुद्धि को अंधरूप से बीना परीक्षण किए ज्ञान का साधन मान लेता है। ज्ञान की प्रक्रिया का वैज्ञानिक विश्लेषण बुद्धिवाद नहीं करता है।

2. वैज्ञानिक, ज्ञान की यथार्थता के लिए अनिवार्यता को मापदंड नहीं मानते। वैज्ञानिक ज्ञान में सदा परिवर्तन, सुधार, विकास, इत्यादि की संभावना बनी रहती है जिसके कारण प्रगति एवं उपलब्धियां विज्ञान में होती है। अतः प्राकृतिक जगत में ऐसे अंतिम एवं निश्चित ज्ञान को प्राप्त करना संभव नहीं।

3. बुद्धिवाद गणित को अपना आदर्श मानते है। अर्थात सार्वभौमता एवं अनिवार्यता को यथार्थ ज्ञान का मापदंड मानते है। परन्तु गणित शाखाओं का ज्ञान विज्ञान है, वस्तु जगत के तथ्यों का यह अध्ययन नहीं करता। अतः इनके लिये यह आदर्श नहीं हो सकता। दर्शन का लक्ष्य है विश्व के पदार्थों की व्याख्या। अतः प्राकृतिक

विज्ञानों की अवहेलना नहीं कर सकता, क्योंकि वे तथ्यों का अध्ययन करते हैं।

4. बुद्धिवाद की पद्धति निगमनात्मक है। यह आगमनात्मक पद्धति की अवहेलना करता है। परन्तु विश्व की घटनाओं की व्याख्या में एवं उनके संबंध में यथार्थ निष्कर्षों को स्थापित करने में आगमन पद्धति का कम महत्व नहीं।

5. बुद्धिवाद की व्याख्या यथार्थ ज्ञान के आधार में जन्मजात प्रत्यय को मानने के कारण है। परन्तु आलोचकों ने जन्मजात प्रत्ययों के सिद्धान्त की कड़ी आलोचना की है। लॉक ने अनेक तर्कों के आधार पर इस सिद्धान्त का खंडन किया और मस्तिष्क को कोरे कागज (Tabula Rasa) की तरह माना, जहाँ कोई भी प्रत्यय जन्मजात नहीं एवं ज्ञान का पहला अक्षर अनुभव दिखता है।

6. बुद्धिवादियों ने ज्ञान की उत्पत्ति में बुद्धि को अनुभव से स्वतंत्र एवं सक्रिय माना जो अपने अंदर से ही बीना किसी बाह्य सहायता के ज्ञान उत्पन्न करती है। आलोचकों ने इसे नहीं माना। मनोवैज्ञानिक के अनुसार सरल से सरलतम ज्ञान में भी संवेदन मूल रूप में रहता है। प्रत्यक्ष ज्ञान की प्रथम अवस्था मानी जाती है, परन्तु संवेदन में अर्थ जोड़ने पर ही प्रत्यक्ष संभव होता है। अतः कोई भी ज्ञान संवेदना की अवहेलना नहीं कर सकते।

7. बुद्धिवाद वस्तु जगत की वस्तुओं के अस्तित्व का ज्ञान देता है, परन्तु आलोचकों के अनुसार इसे स्वीकार नहीं किया जाता। कोई भी पदार्थ के अस्तित्व का ज्ञान अनुभव से ही प्राप्त होता है। जबतक पदार्थ वस्तु के अस्तित्व का ज्ञान नहीं होगा, तबतक हम उसके अन्य लक्षणों को नहीं जान सकेंगे।

8. बुद्धिवाद के अनुसार बुद्धि अपने अंदर से बीना अनुभव की सहायता लिए ज्ञान उत्पन्न करती है। बाह्य जगत के बारे में प्रमाणिकता में संदेह होता है। अंदर से उत्पन्न ज्ञान बाह्य जगत के लिए क्योंकर सत्य होगा? यह ज्ञान वस्तु संवेदी होगा जबकि अनुभव जगत बौद्धिक नियमों के अनुसार चले। प्लेटो, डेकार्ट, हेगेल, आदि ने इस समस्याओं की व्याख्या करने की चेष्टा की, लेकिन वे संतोषजनक नहीं।

9. बुद्धिवाद गणित के यथार्थ ज्ञान को आदर्श मानते हैं। परन्तु कुछ व्यवहारतावादियों (Pragmatism) ने कहा कि 2+2 हमेशा 4 नहीं बनता उदाहरणस्वरूप दो पानी की बूँद में दो पानी की और बूँदें

मिलाए तो चार बूँद नहीं बल्कि एक बड़ी बूँद बन जाएगी। यह तभी सम्भव है, जब जोड़ने से जोड़े गए पदों का अस्तित्व स्वतंत्र रूप से बना रहता है, खत्म नहीं होता। अतः यह ज्ञान भी उपाधिग्रस्त एवं सापेक्ष बन गया। यह अनिवार्य नहीं रहा जैसा बुद्धिवादी समझते हैं।

10. कांट भी बुद्धि के द्वारा दिए गए ज्ञान को आदर्श ज्ञान नहीं मानते। ऐसा ज्ञान नवीन नहीं हो सकता क्योंकि बुद्धि यह ज्ञान बिना अनुभव के सहारे उत्पन्न करती है। ज्ञान में नवीनता का अभाव रहता है। क्योंकि नवीनता केवल अनुभव से प्राप्त होता है।

## निष्कर्ष

अतः बुद्धिवाद ज्ञानात्मक महत्वपूर्ण समस्याओं पर प्रकाश डालता है। विचारक तार्किक आधार पर अपने सिद्धान्त की स्थापना करने की चेष्टा करते हैं, फिर भी यह एकांगी सिद्धान्त सिद्ध होता है, क्योंकि केवल बुद्धि को ज्ञान का साधन मानता है और अन्य तत्वों की अवहेलना करता है जो कम महत्वपूर्ण नहीं। अतः यह एक असंगत सिद्धान्त प्रतीत होता है।